RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-11
November -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

चम्पारण में गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम में महिलाओं का योगदान

डॉ. सुषमा कुमारी

पूर्व शोधार्थीय इतिहास विभाग पटना वि.वि.

समकालीन विश्व में 'नारी विमर्श' ने बौद्धिक जगत एवं ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों यथा समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, साहित्य आदि में केन्द्रीय स्थान बनाया हैं वस्तुतः उत्तर आधुनिक चिंतन में यह प्रखर एवं गतिशील विचार सारणी है जिसने वैचारिकी के क्षेत्र में गंभीर हलचल पैदा कर दिया है अपने आरम्भ से अबतक के नारीवादी आन्दोलनों का केन्द्रीय लक्ष्य नारी की स्वतंत्र अस्मिता की तलाश रहा हैं। नारी अस्मिता का प्रश्न जिन बिन्दुओं से जुड़ा हुआ है उनमें से एक – सामाजिक जीवन के विभिन्न रूपों में उसकी भूमिका एवं योगदान है।

मोहनदास करमचन्द्र गाँधी के 1914 ई. में भारत आगमन के समय पूर्व में समाज सुधारकों द्वारा किये गये सुधारों के परिणाम स्वरूप शिक्षित परिवारों में स्त्रियों की स्थिति सुधरने लगी थी और महिलाओं के प्रति सामाजिक एवं शैक्षणिक मान्यताओं में परिवर्तन की प्रक्रिया चल रही थी। लेकिन उसे स्वराज्य आंन्दोलन के कार्यक्रमों द्वारा सार्वजनिक सेवा के लिए घर से बाहर लाने तथा कुरीतियों से सावधान कर उसके सद्‌गुणों को व्यापक बनाने और आर्थिक स्वावलंबन, साहस एवं उत्तरदायित्व के साथ उँचा उठाने का सतत् प्रयत्न वास्तव में गाँधी ने ही किया। उन्होंने अनुभव किया कि हमारे बहुत आन्दोलन महिलाओं की दुर्दशा के कारण बीच में ही समाप्त हो जाते हैं और इस प्रकार हमारे प्रयत्नों का समुचित परिणाम नहीं मिल पाता।[1] 1917 के चम्पारण सत्याग्रह के सिलसिले में गाँधी का पदार्पण बिहार की धरती पर हुआ। गाँधीजी ने चम्पारण में रचनात्मक कार्यक्रम शुरू किये। चम्पारण के गाँवों में स्वास्थ्य एवं क्रियात्मक ग्रामिण जीवन के विकास में बाधा डालने वाली अनेक व्याधियाँ थी। यहाँ के लोगों में घोर अज्ञान, स्वस्थ्य एवं सफाई के कमी से गाँवों में संक्रामक बीमारियाँ फैलती रहती थी तथा बड़ी संख्या में लोग इसके शिकार होते थे। रैयतों के अज्ञान को दूर करने के लिए प्राथमिक विद्यालय खोलना आवश्यक था। बच्चों की शैक्षणिक योग्यता उतना महत्वपूर्ण नहीं थी जितना उनका नैतिक चरित्र।[2]

8 नवंबर, 1917 ई. को गाँधीजी महाराष्ट्र और गुजरात के कुछ सुसंस्कृत महिलाओं एवं पुरूषों को लेकर चम्पारण लौटे। गाँधीजी के साथ आयी हुई महिलाओं की टोली बिहार में समाज कल्याण कार्य छः महिनों तक करने के लिए आयी थी। ग्रामवासियों का उपचार एवं डॉक्टरी सहायता सर्वेन्ट ऑफ इंडिया सोसाइटी के डॉ. देव के निर्देशन में आरम्भ हुआ। दवाई एवं इलाज के रूप में राहत पहुँचाने का काम सहज ढ़ग से किया जाने लगा। रेड़ी का तेल, कुनैन, गंधक मलहम जैसे सामान्य तथा आमतौर पर प्रचलित दवाएँ वितरित की जाती थी। लोगों के लिए यह प्रबंध लाभदायक सिद्ध हो गया था।[3]

14 नवंबर 1917 ई. को गाँधीजी ने चम्पारण के बड़हरवा लखनसेन गाँव में पहला स्कूल स्थापित किया। यहा गाँव बेतिया राज की जमींदारी में 20 मिल पूरब स्थित हैं। गाँव के एक व्यक्ति शिवगुलाम लाल ने स्कूल के लिए अपना घर दान कर दिया था। एवं अनेक प्रकार से सहायता की।[4] गाँधीजी अपने सहकर्मियों में से योग्य व्यक्ति को शिक्षक के रूप में रखे। इन शिक्षकों में श्री वमन गोखले एवं उनकी पत्नी श्रीमति अवंतिका बाई गोखले बम्बई से आये थे ये दोनों मध्यवर्गीय परिवार के शिक्षित लोग थे जो आर्थिक रूप से काफी सम्पन्न थे। श्री गोखले प्रख्यात इंजीनियर थे। श्रीमती गोखले बम्बई में शिक्षा प्रसार का कार्य करती थी। वे एक प्रशिक्षित नर्स एवं प्रसव कार्य करने में कुशल थी। अपने पति के साथ वह बड़रवा स्थित पाठशाला चला रहीं थी। वे कई महिला मरीजों को देखने उनके घर भी जाती थी। श्री गोखले के निर्देशन में गाँव के कुँए एवं नालियों की सफाई की जा रही थी।

20 नवंबर को भीतरहवा गाँव में गाँधीजी ने दूसरा स्कूल खोला। यह गाँव बेतिया से लगभग 40 मील उत्तर–पश्चिम नेपाल की तराई में बसा है। यहाँ सदाशिव लक्ष्मण सोमन को देखरेख के लिए नियुक्त किया गया था। जो बेलगाँव के सार्वजनि कार्यकर्ता थे। बालकृष्ण योगेश्वर पुरोहित उनकी सहायता के लिए थे। श्री पुरोहित गुजरात के तरूण कार्यकर्ता थे। इनके साथ कस्तुरबा गाँधी भी थी।[5] इन्होंने महिलाओं के बीच काम किया था। डॉ. देव अनुभवी चिकित्सक तथा सर्जन थे। इनके साथ तीन और स्वयंसेवक आये थे। इसमें डॉ. कर्वे के विधवाश्रम से एक महिला भी थी।

17 जनवरी 1918 ई. को मधुबन में एक पाठशाला सेठ घनश्याम दास के घर में खोली गई। इस स्कूल का संचालन नरहरी द्वारका दास पारीख तथा महादेव हरिभाई देसाई कर रहे थे। इनके साथ इनकी पत्नी मणिभाई पारिख तथा दुर्गाबाई और साथ में आनंदी बाई भी थी। प्रोफेसर कृपालानी और विष्णु सीताराम रणदेव ने भी यहाँ का किया था। धरणीधर प्रसाद ने मधुबन में अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ रहकर इस संस्था को सेवाएँ प्रदान की। मधुबन स्कूल में लगभग 100 बच्चों को शिक्षा दी जाती थी। यहाँ एक कन्या

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पाठशाला भी खोली गई थी।[6] इसमें आनंदीबाई के निर्देशन में 40 छात्राओं को पढ़ाया जाता था। इन स्कूलों में कुछ अन्य स्वयंसेवक भी काम करते थे जिनमें ब्रजलाल भीमाजी रूपानी, प्राणलाल प्रभुराम योगी, सारण के रामरक्षा ब्रहमचारी तथा श्यामदेव सहाय प्रमुख थे।

ये स्कूल जनकल्याण के लिए समर्पित इन लोगों की निष्ठा पूर्वक सेवा से आश्रम बन गये थे। लोगों के मन पर इनका गहारा प्रभाव पड़ा। बड़हरवा स्कूल में बुनाई का प्रशिक्षण भी दिया जाता था।[7] ग्रामीण स्त्रियों की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। महिला स्वयंसेविकाएँ उनके घर में जाती थी और उनका विश्वास प्राप्त करती थी। वयस्क महिलाएँ आश्रम में आती थी और पर्दा की कठोरता धीरे – धीरे कम होने लगी थी। स्त्रियाँ पहले से अधिक मुक्त हवा में सांस ले रही हो ऐसा लगता था। उन्होंने चर्खा चलाना तो सीखा ही कुछ पहले से भी जानती थी। इसके अतिरिक्त पढ़ना – लिखना भी सीखा। वे अब ग्रामीण आयोजनों में भाग लेने लगी थी।[8]

महात्मा गाँधी द्वारा चम्पारण में चलाये गये रचनात्मक कार्यक्रमों से शीघ्र ही बिहार की महिलाओं में गातिशीलता का संचार हुआ। गाँधीजी के साथ गुजरात प्रान्त से आनेवाली महिलाएँ स्वयंसेवी समाज सेविकाएँ थी जो आश्रम से जुड़ी हुई थी। इनमें शिक्षिका, नर्स आदि पेशे से संबंधित महिलाएँ थी।

संदर्भ – सूची

1. गुप्त, सुशीला सहाय; गाँधीजी का नारी दर्शन, *महिला चर्खा समिति पत्रिका,* रजत जयंती अंक, पटना, 1965, पृ. 110
2. गाँधी, एम. के.; *आत्मकथा,* पृ. 383
3. गाँधी, एम के.; *आत्मकथा,* पृ. 384
4. वही; पृ. 385
5. गाँधी; एम.के.; *आत्मकथा* , पृ. 386
6. प्रसाद, राजेन्द्र; *महात्मा गाँधी एण्ड बिहार,* पृ. 32
7. दत्त, के.के., *बिहार में स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास,* भाग, पृ. 291
8. प्रसाद, राजेन्द्र; *महात्मा गाँधी एण्ड बिहार* पृ. 33

RRIJM 2015, All Rights Reserved